April - September, 2013 Vol. 7 (1)
अप्रैल – सितम्बर, 2013 अंक 7(1)

DIRECTORATE NEWS

Review Meeting of All India Coordinated Research Project (AICRP) on Home Science

A meeting of all the scientists working in AICRP on Home Science was held at the Directorate from 18-20 September, 2013 under the Chairmanship of Dr. Neelam Grewal, Director, DRWA, to review the proposed technical plan of action of all the components of the project. During her Inaugural address, the Chairperson briefed about major objectives for the XII Plan Period and guidelines for preparing the future plan of action. Scientists from ten AICRP Centres attended the meeting. During the two day discussion the scientists reviewed the technical programme of the project for the XII plan period in terms of objectives, planned the methodologies and identified success indicators. Technical Coordinators of the five disciplines of Home Science presented the work done during the year 2012-13, followed by Brainstorming on future technical programme of AICRP on Home Science.

Dr Naresh Girdhar, Senior Scientist and Co-Nodal Officer (Agricultural Extension Division), ICAR, New Delhi discussed the details of the Result Framework Document (RFD) with all the scientists followed by hands on exercises on preparing the RFD.

Research Advisory Committee Meeting

The 14th Research Advisory Committee meeting of the Directorate was held on April 5 and 6, 2013, under the Chairmanship of Dr K. Narayana Gowda, Vice Chancellor, UAS, Bengaluru. Other member present were Dr V. Venkatasubramanian, ADG (AE), ICAR, New Delhi; Dr V.S. Korikanthimath, Ex-Director, ICAR Research Complex for Goa; Dr Malavika Dadlani, Joint Director Research, IARI, New Delhi;

निदेशालय समाचार

गृह विज्ञान पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना की समीक्षा बैठक

डा. नीलम ग्रेवाल निदेशक, कृ.म.अ.नि., भुवनेश्वर की अध्यक्षता में 18-20 सितंबर, 2013 को अनुसंधान की तकनीकि योजनाओं की समीक्षा के उद्देश्य से, गृह विज्ञान पर अ. भा. स. अनु. प. की समीक्षा बैठक आयोजित की गई । गृहविज्ञान पर अ. भा. स. अनु. प. के दस अनुसंधान केन्द्रों के सभी वैज्ञानिकों ने इस बैठक में भाग लिया । वैज्ञानिकों द्वारा बारहवीं योजना के लिए प्रस्तावित तकनीकि कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण व अनुसंधान के मुख्य उद्दश्यों तथा कार्यप्रणाली पर मंथन किया गया । साथ ही गृह विज्ञान के पाँचों विषयों के तकनीकि समन्वयकों ने वर्ष 2012-13 में पूर्ण किए कार्यों तथा भविष्य के तकनीकि कार्यक्रमों को प्रस्तावित किया । डा. नीलम ग्रेवाल, निदेशक, कृ. म. अनु. नि. ने इस उपलक्ष्य में बारहवीं योजना अवाधि के मुख्य उद्देश्यों को सारांशित किया तथा भविष्य की कार्यवाही के लिए दिशा - निर्देश प्रदान किए।

डा. नरेश गिरधर, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं सह-नोडल अधिकारी (कृषि प्रसार विभाग), भा.कृ.अनु.प., नई दिल्ली ने सभी उपस्थित वैज्ञानिकों के समक्ष परिणाम रूपरेखा दस्तावेज (RFD) प्रस्तुत किया ।

अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक

चौदहवीं अनुसंधान सलाहकार समिति की बैठक, डा. के. नारायण गौडा, कुलपति, यू; ए. एस, बैंगलौर की अध्यक्षता में 5 - 6 अप्रैल, 2013 को आयोजित की गई। वैठक के अन्य सदस्य डा.वी वेंकटसुब्राम्यम, ए डी जी कृषि विस्तार, नई दिल्ली; डा. वी.एस कोरीकान्तीमठ, पूर्व निदेशक, आई.सी.ए.आर. अनुसंधान परिषद, गोवा; डा.मालविका ददलानी, संयुक्त निदेशक, आई.ए.आर.आई, नई

Dr V.K. Tewari, Professor, Agriculture & Food Engineering Department (Drudgery Reduction), IIT, Kharagpur; Dr M P S Arya, Acting Director, DRWA and Dr S.K. Srivastava, Principal Scientist and member secretary RAC. Dr. M.P.S. Arya Acting Director, welcomed the Chairman and RAC Members and explained briefly about the research achievements and other developments of the Directorate. In his opening remark Dr. K. Narayana, emphasized that youth girls and boys are moving away from the farming. Attracting and Retaining Rural Youth to Agriculture (ARYA) is a challenging need of the hour to address food security of the country. The Chairman suggested that DRWA should play major role for identifying women friendly technologies which can be refined and validated at field level. After opening remarks, action taken report on the proceedings of the 13th RAC meeting was presented, discussed and confirmed. Discussions were also made on research achievements, recommendations of National Consultation and Global Conference and prioritization of future research programmes.

दिल्ली, डा. वी.के तिवारी, प्रौफेसर, आई.आई.टी, खडगपुर, डा.एम.पी.एस. आर्य, कार्यकारी निदेशक, कृ.म.अनु.नि. भुवनेश्वर एवं डा. एम.के श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक, अनुसंधान सलाहकार समिति थे। डा. एम. पी. एस. आर्य, कार्यवाहक निदेशक, कृ. म. अनु. नि. ने समिति के अध्यक्ष तथा सदस्यों का स्वागत किया एवं संक्षेप में संस्थान की शोध उपलब्धियों, विकास कार्यक्रम तथा अन्य गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समिति के अध्यक्ष नारायण गोड़ा ने कृ. म. अनु. नि. को महिला-अनुकूल प्रैाधोगिकियों की पहचान करने, उनको परिष्कृत करके क्षेत्र स्तर पर प्रसारित करने में प्रमुख भूमिका निभाने का सुझाव दिया।

Institute Research Council

The 13th meeting of Institute Research Council (IRC) was conducted on April 9 and 10, 2013 under the Chairmanship of Dr. M.P.S. Arya, Acting Director, DRWA, Bhubaneswar to discuss and review the progress of on-going research projects and plan the future course of action. A total of 13 new projects, seven ongoing projects, and six completed collaborative projects were discussed.

संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक

तेरहवीं संस्थान अनुसंधान परिषद की बैठक 9 - 10 अप्रैल, 2013 को डा. एम. पी. एस. आर्य, कार्यवाहक निदेशक, कृ.म.अनु.नि., भुवनेश्वर की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में कुल 13 अनुसंधान परियोजनाओं (सात चल रही तथा छः पूर्ण हुई सहयोगी परियोजनाओं) की प्रगति एवं भावी दिशा पर चर्चा की गई।

Hindi Divas and Hindi Pakhawada Observed

The Directorate celebrated Hindi Divas on 14th September and Hindi Pakhawada from September 16-30, 2013. The competitions organized during this included Hindi slogan, Hindi essay competition, Hindi speed reading, Hindi noting and drafting, Hindi typing and Hindi debate. All the staff members of DRWA participated in the programmes organized and the winners were awarded prizes. A Workshop was organized on September 28, 2013 for promotion of Hindi in daily official use.

हिन्दी दिवस एवं हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन

निदेशालय में 16 सितंबर 2013 को हिन्दी दिवस एवं 16 - 30 सितंबर 2013 को हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताओं उदाहरणतः आदर्श वाक्य प्रतियोगिता, निबंध लेखन, वेग - गति पाठन, टिप्पणी एवं प्ररुपण, टंकण, वाद-विवाद प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए 28 सितंबर 2013 को निदेशालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें निदेशालय के सभी कर्मचारियों ने भाग लिया।

RESEARCH HIGHLIGHTS

अनुसंधान उपलब्धियाँ

Multi Agency Participatory Extension Model

A thematic model has been developed under the project 'Multi Agency Participatory Extension Model (MAPEM) for Livelihood Improvement of Rural Women through Backyard Poultry'. Four villages (Angarpada, Haridamada, Guptapada and Padasahi) in Khurda district of Odisha have been adopted under the project. Eight Youth Core Groups (1 male + 1 female

बहुएजेन्सी भागीदारी विस्तार मॉडल

बहु एजेन्सी भागीदारी विस्तार मॉडल परियोजना के अंतर्गत घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन द्वारा ग्रामीण महिलाओं की आजीविका सुधारने हेतु एक विषयगत मॉडल विकसित किया गया है। उडिशा के खुर्दा जिले के चार गाँवो (अंगरपाडा, हरीडमडा, गुप्तापाडा एवं पदासायी) को इस परियोजना के अंतर्गत अपनाया गया है। प्रत्येक गाँव में आठ युवा कोर समूह (यूवा मूल समूह : एक पुरूष + एक

in each village) have been identified to take care of the Mother Units of poultry chicks. For successful implementation of the Model issues have been identified in backyard poultry farming. The responsibilities have been assigned to local Multi Stakeholders like NABARD, CPDO, IMAGE, OPOLFED, Department of AH, Rural Youth Core Groups and Farm Women. A training programme on 'Construction of Mother Units by using the indigenous materials' for rural youths was conducted on September 23, 2013 in Haridamada village. Fifteen People participated in the training programme.

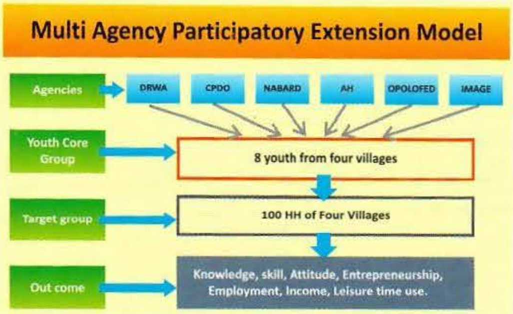

महिला प्रति समूह) चूजों की मदर इकाई की देखभाल करने के लिए बनाए गए हैं। घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन संबंधी मुददों एवं स्थानीय बहुहितधारकों (जैसे नाबार्ड, सी.पी.डी.ओ, इमेज (IMAGE), औपलफेड् (OPOLFED), पशुपालन विभाग, ग्रामीण युवा कोर समूह, तथा कृषक महिलाओं) की जिम्मेदारियों की पहचान की गई । इसके अतिरिक्त इस परियोजना के तहत ग्रामीण युवाओं के लिए 'स्थानीय सामग्री के प्रयोग से मदर इकाइयों का निर्माण' पर 23 सितंबर, 2013 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम हरिडामाडा गाँव में आयोजित किया गया जिसमें 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

Female Work Participation Scenario in India

Female work participation rate (WPR), which is the proportion of female workers in the age group of 15-64 years to total female population, is an important indicator of level of economic participation of women. An analysis carried out using Census 2011 data reveals that the female WPR declined slightly from 25.6 per cent to 25.5 per cent between 2001 and 2011. Delhi has the lowest female WPR (10.6%) followed by Lakshadweep (11.0%), Punjab (13.9%), Daman & Diu (14.9%), Chandigarh (16.0%) and Uttar Pradesh (16.8%). On the other hand, Himachal Pradesh has the highest female WPR (44.8%) followed by Nagaland (44.7%), Sikkim (39.6%) and Manipur (36.5%). Among the states and UTs, 15 observed a decline and 20 observed improvement in female WPR during 2001-2011. Five least performing states and UTs (based on decline in female WPR) are Dadra and Nagar Haveli (13.5% points), Mizoram (11.4 points), Haryana (9.4 points), Punjab (5.10 points) and Gujarat (4.5 points). Some of the states and UTs that experienced improvement in female WPR are Nagaland (6.7 points), Lakshadweep (3.7 points), Kerala (2.8 points), Jharkhand (2.7 points) and Odisha (2.5 points).

भारत में महिला कार्य भागीदारी परिदृश्य

महिला कार्य भागीदारी दर (WPR), जो कि 15 से 64 आयुवर्ग में महिला श्रमिकों का अनुपात है, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी स्तर का एक महत्वपूर्ण सूचक है। 2011 की जनगणना के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि महिला कार्य भागीदार दर 2009 के मुकाबले 2011 में 25.6 प्रतिशत से 25.5 प्रतिशत घटी है । दिल्ली में सबसे कम WPR (10.6%) पाया गया। इसके बाद क्रमशः लक्षद्वीप(11.0%), पंजाब में (13.9%), दमन - दिव में (14.9%), चंडीगड में (16.0%), तथा उत्तर प्रदेश में (16.8%) में आंका गया । वही दूसरी ओर सबसे अधिक WPR हिमाचल प्रदेश (44.8%) में मापा गया । अन्य राज्य, जिनमें WPR थोड़ा अधिक पाया गया, हैं-नागालैंण्ड (44.7%), सिकिकम् (39.6%)एवं मनीपुर (36.5%)। सन् 2001 से 2011 के दौरान, सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों में से 15 में WPR में गिरावट तथा 20 में सुधार पाया गया। पाँच ऐसे राज्य तथा केन्द्र शासित प्रदेश जिनमें WPR का प्रदर्शन सबसे निम्न रहा हैं - दादरा और नगर हवेली (16.5 अंक), मिजोरम (11.4 अंक), तथा गुजरात में (4.5 अंक)। कुछ राज्य तथा केन्द्रशासित प्रदेश जैसे नागालैण्ड (6.7 अंक), लक्षद्वीप (3.7 अंक), केरल (2.8 अंक), झारखण्ड (2.7 अंक), तथा उडिशा (2.5 अंक), अंकों के साथ WPR में वृद्दि के साथ अग्रणी रहे।

Aqua and Poultry Feed from Fish and Shellfish Wastes for Employment Generation of Coastal Women

Under the project acid added silage was prepared with the carp visceral waste obtained from local markets by adding 1.5% formic acid and 1.5% hydrochloric acid. The proximate composition of the silage was studied. To know the effect of antioxidant on the keeping quality of silage, 2 lots of silage were prepared, with and without the addition of

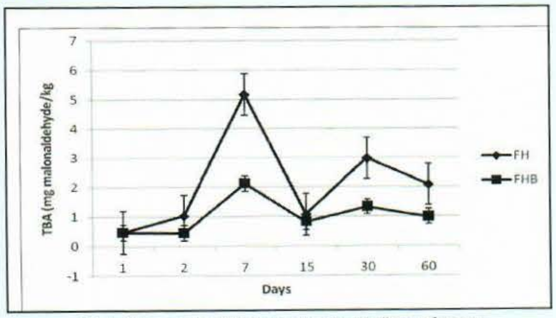

Fig 3: Changes in TBA value of visceral silage of carps prepared with and without the addition of BHT during storage at 28+20C
FH- Acid silage prepared without the addition of BHT
FHB- Acid silage prepared by adding 200ppm BHT
N=3

तटीय महिलाओं की आय सृजन के लिए मत्स्य तथा अपशिष्ट/कचरे से पोल्ट्री फीड तैयार करना

परियोजना के तहत स्थानीय बाजारों से प्राप्त कार्प के कचरे में 1.5 प्रतिशत फॉर्मिक एसिड तथा 1.5% हाइड्रोक्लोरिक अम्ल मिलाकर साइलेज तैयार किया गया तथा निर्मित साइलेज की संरचना का अध्ययन किया गया । साइलेज की संरक्षण गुणवत्ता पर एंटीऔक्सिडेन्ट का प्रभाव जानने के लिए दो प्रकार के साइलेज तैयार किए गए - एक ब्युटाइल हाइड्रोकिसल टोलिन (100 पीपीएम) डालकर तथा इसरा ब्युटाइल हाइड्रोकिसल टोलिन के बिना । नतीजों में पाया गया कि एंटीओकिसडेन्ट के उपयोग से एसिड

antioxidant Butyl Hydroxy Toluene (200ppm). The antioxidant significantly ($P<0.05$) reduced the rate of oxidation in acid silage. Nearly 30 percent of the weights of the Indian Major Carps being non muscle go as waste. This extremely perishable by product, having 30 - 40 per cent crude protein was used as a low cost alternative for silage production.

साइलेज में ऑक्सीकारण की दर में काफी कमी आई। कार्प के कुल वजन में उसकी माँसपेशियों का योगदान 70% तक होता है । बाकी भाग प्राय: अपशिष्ट / कचरे के रूप में व्यर्थ जाता हैं । इस अत्यंत शीघ्र खराब होने वाली अपशिष्ट में नमी की मात्रा उच्च होती है तथा शुष्क पदार्थ के आधार पर क्रूड प्रोटीन की मात्रा 30 से 40 % तक होती है । कार्प अपशिष्ट को प्राय: उपयोग में लाने के लिए सबसे अच्छा विकल्प है - इसके उप - उत्पाद बनाना । साइलेज प्रक्रिया एक व्यवहारिक, सरल तथा कम लागत वाला विकल्प है ।

Participation of Farmwomen in Mango Orchard

To assess the participation of farm women in mango cultivation and activities carried out by them, group discussions and interviews were conducted in a participatory mode in Dhenkanal district of Odisha. It was found that more than 50 per cent of the workers in orchards were women, mostly having working experience more than 3-4 years. Major manual activities were performed by women namely - nursery raising (70%), plantation (60%), weeding (100%), irrigation / watering (50%), application of fertilizer (80%), harvesting (60%) and management of mango orchard except grafting (30%). Among these, nursery raising, plantation, weeding and application of fertilizer were the drudgery prone activities as perceived by the farm women. There is a need to introduce women friendly farm tools and equipment in mango orchards. Most of the farm women expressed their interest to learn new technologies and skills for reduction of drudgery and improving their productivity.

कृषक महिलाओं की आम की बागवानी में भागीदारी

आम की बागवानी में कृषक माहिलाओं की भागीदारी आंकने के उद्देश्य से विभिन्न कृषक महिलाओं के साथ सामूहिक चर्चा की गई एवं व्यक्तिगत रूप से साक्षात्कार लिए गए । अध्ययन में पाया गया कि बगीचों में 50 प्रतिशत से अधिक संख्या में महिला श्रमिक कार्य कर रही थी जिनको 3 से 4 साल का कार्यानुभव था । महिलाओं द्वारा हाथ से की जाने वाली गतिवीधीयाँ थीं - नर्सरी लगाना (70 %), वृक्षारोपण (60%), निराई (100%), सिंचाई (50%), उवर्रक डालना (80%), कटाई (60%), तथा ग्राफ्टिंग को छोडकर बगीचों का प्रबंधन करना । इन सभी गतिविधियों में से कृषक महिलाओं द्वारा कथित रूप से नर्सरी लगाना, वृक्षारोपण, निराई और उर्वरक डालने की क्रियाओं में कठिन परिश्रम अनुभव किया गया । सर्वेक्षण में पाया गया कि आम के बागों में महिंलाओं के अनुकूल कृषि उपकरण उपलब्ध कराने की आवश्यकता है। अधिकतर महिलाओं ने कठिन परिश्रम कम करने तथा उत्पादकता बढ़ाने हेतु नई प्रौद्योगिकियों तथा कौशल सीखने के लिए अपनी रूचि अभिव्यक्त की ।

PROGRAMMES CONDUCTED

आयोजित कार्यक्रम

Stake Holders Meets

A Stakeholders' Meet under the project 'Multi Agency Participatory Extension Model (MAPEM) for Livelihood Improvement of Rural Women through Backyard Poultry', was conducted on September 3, 2013 at DRWA. Various Stake Partners like NABARD, CPDO, IMAGE, OPOLFED, Department of Animal Husbandry, Rural Youth Core Groups and Farm Women from adopted villages of Angarpada (Guptapada & Haridamada) and Padasahi of Jatni and Bhubaneswar block of Khurda district participated in the meet for successful implementation of the Model. Discussion was held on the convergence of all the stakeholders for providing their cooperation and valuable inputs to make the participatory model a success.

A Stakeholders' Meeting was organized on September 12 - 13, 2013 at the Directorate under the Institute research project 'Identification of gender issues in IPM and suitable intervention with women's perspective' with Dr Neelam Grewal, Director, DRWA in Chair. The aim of the meeting was to understand the problems of farmers/ farmwomen related to IPM and to bridge the

हितधारकों की बैठक

'घर के पिछवाड़े में मुर्गीपालन द्वारा ग्रामीण महिलाओं की आय वृद्धि के लिए बहुएजेन्सी भागीदारी प्रसार मॉडल' परियोजना के अंतर्गत 03 सितंबर, 2013 को हितधारकों की बैठक कृ.म.अनु.नि. में आयोजित की गई । इस बैठक में विभिन्न हितधारकों जैसे नाबार्ड, सीपीडीओ, इमेज (IMAGE), औपलफेड् (OPOLFED), पशुपालन विभाग, ग्रामीण युवा कोर समूह, तथा कृषक महिलाओं ने मॉडल के सफल क्रियान्वयन के लिए हिस्सा लिया ।

'एकीकृत कीट प्रबंधन में लैंगिक मुद्दों की पहचान तथा महिलाओं के लिए उपयुक्त हस्तेक्षप' परियोजना के तहत डा. नीलम ग्रेवाल, निदेशक, कृ.म.अनु.नि. की अध्यक्षता में 12-13 सितंबर, 2013 को हितधारकों की बैठक आयोजित की गई । यह बैठक कृषकों / कृषक

technological gap among farmwomen through Institutional mechanism. Dr. S. S. Nanda, Dean, Extension Education, Orissa University of Agriculture and Technology, Bhubaneswar was the Chief Guest on the occasion. A total of 23 Programme coordinators of KVKs and Plant Protection Officers/ Agriculture Officers from ten agro-climatic zones of Odisha attended the meet.

Farmer-Scientist Interfaces

Since gender gap in the nutritional status was found highest in rice-rice cropping system as compared to other three rice based cropping systems viz. rice-pulse, rice-millet, and rice-wheat; a Farmer-Scientist Interface was organized on July 17, 2013 at Jaypore village of Puri district, under the project 'Reducing the gender gap in the nutritional status of family members in rice based cropping system'. The major objective of the inteface was to assess the gender gap among the family members. The Interface was attended by 30 farmers. The major gaps identified were gender gap in the anthropometric measurements as calculated by Body Mass Index, haemoglobin level and knowledge on various aspects of nutrition and gap in the cropping pattern. Scientists sensitized the stakeholders' means of bridging the gap in the nutritional status between men and women.

A Farmer-Scientist Interface was organized on August 17, 2013 at Jhadeswarpur village of Cuttack district, under the project 'Assessment of Integrated Farming Model for improved food security and livelihood in rural households'. More than fifty farmers, including farmwomen of seven villages (Govindpur, Dularpur, Pandia, Nuagaon, Gopalpur, Bhadraswar and Jhadeswarpur) attended the meeting. Discussion was held on different cropping patterns and the involvement of farmwomen in different farm activities. Scientists from DRWA discussed about the different integrated farming models and proper utilization of available resources for enhancing the nutritional security.

A Scientist-Farmers Interaction meet was organized at village Padmapur in Keonjhar district of Odisha on August 22, 2013 under the project 'Enhancing productivity of fruit based cropping models for income generation of farmwomen' with an aim to understand the problems of the farmers in cultivating horticultural crops and to bridge the technological gap among farmwomen. DRWA scientists highlighted the importance of technological intervention like improved varieties, seed treatment, seedling raising

महिलाओं की एकीकृत कीट प्रंबधन संबधी समस्याओं को तकनीकि उपलब्ध कराने के उद्देश्य से आयोजित की गई । बैठक के मुख्य अतिथि डा. एस. एस.नंदा, डीन, प्रसार शिक्षा, OUAT, भुवनेश्वर रहे । उडिशा के दस कृषि जलवायु क्षेत्रों के कृषि विज्ञान केन्द्रों के 23 कार्यक्रम समन्वयकों /कृषि अधिकारियों / पादप संरक्षण अधिकारियों ने इस बैठक में हिस्सा लिया ।

कृषक-वैज्ञानिक इंटरफेस

'चावल आधाति फसल प्रणाली में पारिवारिक सदस्यों के पोषण स्तर में लैंगिक अंतर को कम करना', परियोजना में एक सर्वेक्षण में पाया गया कि चावल - चावल फसल प्रणाली में पोषण स्थिति में लैगिक अंतर अन्य फसल प्रणालियें - चावल -दाल, चावल-मोटे-अनाज तथा चावल -गेहूँ - के मुकाबले अधिक है । इसी संबध में 17 जुलाई 2013 को पुरी जिले के जयपुर गॉव में परिवार के सदस्यों के पोषक स्तर में लैगिक अंतर को जानने के उद्देश्य से एक कृषक - वैज्ञानिक इंटरफेस आयोजित किया गया । इस इंटरफेस में 30 कृषकों जिनमें कृषि महिलाएं भी थीं ने भाग लिया । मानवशास्त्रीय मापकों के आधार पर मुख्य अन्तर पुरुषों एवं महिलाओं के पोषण स्तर, हीमोग्लोबीन स्तर, पोषण संबंधी ज्ञान स्तर एवं कृषि प्रणाली में पाया गया । वैज्ञानिकों ने पोषण स्तर में लैंगिक अंतर को समाप्त करने हेतु अपने सुझाव कृषकों को प्रदान किए ।

'ग्रामीण परिवारों में खाद्य सुरक्षा तथा आजीविका वृद्धि के लिए एकीकृत खेती मॉडल का ऑकलन' परियोजना के अंतर्गत कटक जिले के झाड़ेश्रपुर गाँव में 17 अगस्त 2013 को एक किसान - वैज्ञानिक इंटरफेस आयोजित किया गया। इस बैठक में सात गाँवों (गोविन्दपुर, दुलारपुर, पाण्डिया, नुवागॉव, गोपालपुर, भद्रस्वर और झाडेशरपुर) की कृषक महिलाओं समेत पचास से अधिक किसानों ने हिस्सा लिया। बैठक में विभिन्रि फसल पद्धति और विभिन्न कृषि गतिविधियों में कृषक महिलाओं की भागीदारी पर चर्चा की गई । कृ.म.अनु.नि. के वैज्ञानिकों ने पोषण सुरक्षा बढाने के लिए एकीकृत खेती मॉडल और उपलब्ध संसाधनों के समुचित उपयोग के बारे में चर्चा की ।

बागवानी फसलों की खेती में किसानों को आने वाली समस्याएँ तथा कृषक महिलाओं के मध्य तकनीकि अंतर को कम करने के उद्देश्य से उडिशा के क्योंझर जिले के पदमपुर गॉव में 22 अगस्त, 2013 को 'कृषक महिलाओं की आय वृद्धि के लिए फल - आधारित फसल मॉडल की उत्पादकता वृद्धि करना' परियोजना के अंतर्गत एक कृषक - वैज्ञानिक इंटरेफस आयोजित किया गया । कृ.म.अनु.नि.के वैज्ञानिकों ने विभिन्न तकनीकों जैसे उन्नत किस्मों, बीज उपचार, अंकुर

techniques, soil testing, crop diversification, stage of harvesting, grading, packaging and linkages of marketing for enhancing crop productivity and getting remunerative price of produce. During the interaction, farmers expressed their needs like quality planting materials and seeds besides the technological support for crop production and post harvest handling. Further, some of the farmers of the groups were linked with outlets of retail marketing chains at the Bhubaneswar for marketing their produce. Critical inputs like seeds of improved varieties of okra, tomato, chili, harvesting tools for okra and green net shade cum insect proof net were distributed to the farmer to initiate the work. More than 30 farmers, including farmwomen and Chairman of Agricultural Technology Management Agency (ATMA), Anandapur block of Keonjhar district, Mr. Abhay Kumar Sahoo, attended the Interaction.

स्थापना तकनीकि, मृदापरिक्षण, फसल विविधीकरण, कटाई वृद्धि के लिए विपणन के लिंकेज तथा उत्पाद का लाभकारी मूल्य प्राप्त करना आदि पर किसानों को जानकारी दी । वार्ता के दौरान किसानों ने अपनी कुछ जरूरी आवश्यकताएं प्रकट की, उदाहरणत: तकनीकि सहायता के अलावा फसलोंत्पादन के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री तथा बीज एवं कटाई उपरांत उत्पाद की देखरेख । कार्य शुरू करने के लिए किसानों को महत्वपूर्ण उत्पादक सामग्री जैसे भिंडी, टमाटर, मिर्च की उन्नत किस्मों के बीज, भिंडी तोड़ने के यंत्र, हरा नेट शेड-कम-कीट प्रतिरोधी नेट आदि वितरित किए गए। कृषक महिलाओं समेत 30 से अधिक किसान तथा कृषि तकनीकि प्रबंधन एजेन्सी (ATMA) आनंदपुर ब्लॉक, क्योंझर जिला के अध्यक्ष, श्री अभय कुमार साहु बैठक में शामिल हुए ।

World Environment Day Celebrated

The World Environment Day was celebrated in the Directorate on June 5, 2013. Dr. Arya Kumari Panigrahi, HOD, Indian Institute of Hotel Management, Bhubaneswar was the Chief Guest on the occasion while Dr Pravati Mishra, Director, College of Home Science, OUAT, Bhubaneswar was the Guest of Honour. The theme for this year was 'Think, Eat and Save'. Fifty participants from different districts of the state attended the meeting. The Technical Session focused on topics such as adverse effects of junk food on the health of youth, post harvest management of fruits and vegetables to minimize their losses, wastage of food in social ceremonies and its remedial measures, common food adulterants and their health hazards in the day to day life.

विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन

निदेशालय में 5 जून, 2013 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया । सुश्री आर्य कुमारी पाणिग्राही, विभागाध्यक्ष, IHM कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं जवकि डा. प्रवति मिश्रा, निदेशक, गृहविज्ञान महविद्यालय, OUAT, भुवनेश्वर ने इस अवसर पर अतिथि सम्मान के रूप में भाग लिया । इस वर्ष का विषय था 'सोचिए, खाइए तथा बचाइए' । इस कार्यक्रम में पचास प्रतिभागियों (स्वयं सेवी संस्थाएं, बहु हितधारकों तथा विद्यार्थियों) ने भाग लिया । तकनीकि सत्र में विभिन्न विषयों उदाहारणत: किशोरें के स्वास्थ्य पर जंक फूड का प्रभाव, सामाजिक समारोहें में भोजन की बर्बादी तथा उसके उपचारात्मक तरीके, भोजन में मिलावट एवं उनका कुप्रभाव आदि पर विचार - विमर्श किया गया ।

MASS MEDIA PROGRAMMES

A talk on "Krushi Gruhuninka Pain Ketak Athrakari Dhanda" in Odia (Income generating activities for farm women) was broadcasted through All India Radio, Cuttack on 22.04.2013.

A talk on "Gramina Mahilanka Arthanaitika Bikas" in Odia (Development of economic status among farm women) was telecasted through Door Darshan, Bhubaneswar on 12.10.2013.

मास मीडिया कार्यक्रम

दिनांक 22 अप्रैल, 2013 को 'कृषक महिलाओं के लिए आय वृद्धि की गतिविधियाँ, ऑल इण्डिया रेडियो, कटक पर उडिया भाषा में वार्ता।

दिनांक 12 अक्टूबर, 2013 को 'कृषक महिलाओं के आर्थिक स्तर का विकास' पर दूरदर्शन, भुवनेश्वर में उडिया भाषा में वार्ता ।

NEW DIRECTOR JOINED

Dr. Neelam Grewal joined as Director, DRWA, Bhubaneswar on July 15, 2013. Before joining this institute, Dr Grewal served as Dean, College of Home Science, Punjab Agricultural University, Ludhiana specializing in Clothing and Textiles. She has vast experience in teaching, research, extension and administration.

नए निदेशक ने पदभार ग्रहण किया

डा. नीलम ग्रेवाल ने 15 जुलाई 2013 को कृ.म.अनु.नि., भुवनेश्वर में निदेशक का पदभार ग्रहण किया । इस संस्थान से जुड़ने से पूर्व डा. नीलम ग्रेवाल पिछले आठ वर्षों से डीन, गृहविज्ञान महाविद्यालय, पंजाब, कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के पद में सेवारत रहीं । उन्हें शिक्षण, अनुसंधान, प्रसार एवं प्रशासन का व्यापक अनुभव है।

PROMOTIONS/APPOINTMENTS

- Dr. Kushagra Joshi joined as Scientist, Home /Family Resource Management on April 12, 2013.
- Dr. K. Ponusamy, Principal Scientist, Agriculture Extension was selected as Head NDRI, Karnal and was relieved on May 13, 2013.
- Dr. S.P.Singh, Senior Scientist, Farm Machinery & Power was selected as Principal Scientist IARI, New Delhi and was relieved on May 29, 2013.
- Dr. Kundan Kisore, Senior Scientist was selected as Senior Scientist (Grade pay 9000/-) in CHES, Bhubaneswar (under IIHR) and was relieved on July 20, 2013.
- Dr. J. Charles Jeeva joined the Directorate as a Senior Scientist, Agriculture Extension from CIFT, Kochi on August 17, 2013.

पदोन्नती / नियुक्तियाँ

- डा. कुशाग्रा जोशी की संस्थान में वैज्ञानिक, गृह / पारिवारिक संसाधन प्रबंधन के पद पर 12 अप्रैल 2013 को नियुक्ति हुई ।
- डा. के. पोन्नुसामी, प्रधान वैज्ञानिक, कृषि विस्तार विभाग, का चयन विभाग प्रमुख, NDRI, करनाल के पद पर हुआ तथा संस्थान से 13 मई 2013 को पदभार मुक्त हुए ।
- डा. एस.पी. सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक कृषि यंत्र एवं उर्जा, का चयन प्रधान वैज्ञानिक, आई.ए.आर.आई, नई दिल्ली में हुआ और संस्थान से 29 मई को पदभार मुक्त हुए।
- डा. कुन्दन किशोर, वरिष्ठ वैज्ञानिक, बागवानी का चयन वरिष्ठ वैज्ञानिक (ग्रेड वेतन 9000/-) के रूप में CHES, भुवनेश्वर में हुआ तथा संस्थान से 20 जुलाई 2013 को पदभार मुक्त हुए ।
- डा. जे. चार्ल्स जीवा, CIFT, कोच्चि से संस्थान में वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विस्तार के रूप में 17 अगस्त 2013 को नियुक्त हुए ।

DISTINGUISHED VISITORS

Dr. V. Sadamate, Former Advisor Planning Commission, Government of India visited the Directorate on September 27, 2013.

विशिष्ट आगंतुक

डा.वी. सदामते, पूर्व सलाहकार, योजना आयोग, भारत सरकार ने 27 सितंबर 2013 को निदेशालय का दौरा किया ।

PARTICIPATION IN TRAININGS/ WORKSHOP/SEMINARS /CONFERENCES

- Dr. S.K.Srivastava attended Management Development Programme on Leadership Development (Pre-RMP Cadre) from August 26 to September 6, 2013, at National Academy of Agricultural Research Management, Hyderabad
- Dr. S.K.Srivastava attended Workshop cum Technical Session with scientific community on New molecule - CYAZYPYR , at Ramaiah Hall OUAT Bhubaneswar on September 6, 2013
- Dr. Anil Kumar attended Agribusiness Camp organized by Zonal Technology Management- Business Planning and Development Unit, NIRJAFT, Kolkata, at Gangtok on June 24, 2013
- Dr. Sabita Mishra attended National Seminar on Social Dimensions of Extension Education in Holistic Development of Rural Livelihood at CBGAPG College, Lucknow, UP on April 26-27, 2013
- Dr. Sabita Mishra attended XX Zonal workshop at DRI, Chitrakoot, M.P, Zone VII during June 21-23, 2013
- Dr. Sabita Mishra attended Foundation Day of CRRI, Cuttack on April, 23, 2013
- Dr. Jyoti Nayak attended XX Zonal workshop at DRI, Chitrakoot, M.P, Zone VII during June 21-23, 2013

प्रशिक्षण/कार्यशाला/संगोष्ठी/सम्मेलन में भागीदारी

- डा. एस.के. श्रीवास्तव ने नेतृत्व विकास पर प्रबंध विकास कार्यक्रम (पूर्व RMP संवर्ग) में 26 अगस्त से 6 सितंबर 2013 तक राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रवंधन आकादमी, हैदराबाद में हिस्सा लिया।
- डा.एस.के. श्रीवास्तव ने 6 सितंबर 2013 को नए अणु-CYAZYPYR पर वैज्ञानिक समुदाय के साथ कार्यशाला सह तकनीकि सत्र OUAT, भुवनेश्वर में भाग लिया।
- डा. अनिल कुमार ने 24 जून 2013 को जोनल प्रौद्योगिकी प्रबंधन योजना तथा विकास इकाई NIRJAFT, कोलकाता द्वारा गंगटोक में आयोजित स्वास्थ्य शिविर में भाग लिया।
- डा.सबिता मिश्रा ने 'ग्रामीण आजीविका के समग्र विकास में प्रसार शिक्षा के सामाजिक आयामों' पर CBGAPC कॉलेज, लखनऊ में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में 26-27 अप्रैल 2013 को भाग लिया।
- डा. सबिता मिश्रा ने बीसवीं आँचलिक कार्यशाला, डी.आर.आई.चित्रकूट, मध्यप्रदेश में 21-23 जून 2013 को भाग लिया।
- डा. सबिता मिश्रा ने 23 अप्रैल 2013 को केन्द्रीय चावल अनुसंधान केन्द्र (CRRI) कटक के स्थापना दिवस में भाग लिया।
- डा. ज्योति नायक ने 21-23 जून 2013 के दौरान बीसवीं आचँलिक कार्यशाला, डी.आर.आई. चित्रकूट, मध्यप्रदेश में हिस्सा लिया।

RECOGNITION/ AWARDS

Dr Sabita Mishra was honoured with ISEE Fellow Award by Indian Society of Extension Education, New Delhi during National Seminar, 2013.

मान्यता / पुरस्कार

डा. सबिता मिश्रा को राष्ट्रीय संगोष्ठी, 2013 के दौरान भारतीय विस्तार शिक्षा सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा (ISEE) फैलो आवार्ड प्रदान किया गया।

From Director's Desk

In the agricultural sector women participate in a number of agro-production systems that govern the nature and extent of their involvement. There is a significant heterogeneity across regions, states, locations and context in the role of rural women and their participation in agricultural activities. Most significant agricultural activities undertaken by women include farming, post harvest management, horticultural activities, livestock management, fisheries and homestead resources. Among farming activities, women generally participate in transplanting, weeding, plant protection, harvesting, processing, winnowing, storing, etc. Many of these are very laborious, time consuming and drudgery prone. There is a need to tailor technologies to meet the needs of women agricultural workers - and to make them affordable enough for women to access. It should be ensured that technologies are accessible, income generating, low cost and poverty reducing, women friendly and drudgery eliminating. Some of the gender friendly and low cost technologies validated for drudgery reduction of farm women are maize dehusker-sheller, groundnut decorticator, improved sickle, parboiling unit, vegetable plucker, etc. These have to be popularized and publicized through the media for large scale adoption. In sugarcane production also drudgery prone activities such as scrapping are being carried out by women. Similarly, majority of flower and cotton plucking is in the hands of women. DRWA has been making efforts to develop/ refine such technologies. However, the adoption of these has not been very satisfactory due to lack of awareness and availability in the market. Simultaneously, efforts are needed to make these easily available in the market . It is only through such concerted efforts that the plight and productivity of women in agriculture in India can be improved.

Neelam Grewal

निदेशक की कलम से

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी विभिन्न कृषि उत्पादन प्रणाली में बडी संख्या में है जो प्रकृति एवं उनकी भागीदारी की सीमा द्वारा निर्धारित होती है। ग्रामीण महिलाओं की भूमिका एवं भागीदारी में क्षेत्र, राज्य, स्थानों और संदर्भ के आधार पर महत्वपूर्ण विविधता है। महिलाओं द्वारा की जाने वाली महत्वपूर्ण गतिविधियों में कृषि, फसल परिक्षण प्रबंधन, बागवानी गतिविधियाँ, पशुधन प्रबंधन, मत्स्य पालन और घरेलू संसाधन प्रबंधन शामिल हैं। कृषि गतिविधियों में महिलाएं मुख्यत: रोपाई, निराई, पौध संरक्षण, कटाई, परिक्षण, प्रसंस्करण एवं संचयन में लिप्त होती हैं। इनमें से अधिकांश गतिविधियाँ समय लेने वाली, कठिन परिश्रम एवं थका देने वाली होती हैं। आवश्यकता इस बात की है कि कृषि महिला श्रमिकों की जरुरत के अनुसार प्रौद्योगिकी विकसित की जाए जिसे वे आसानी से प्राप्त कर सकें। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि प्रौद्योगिकी आसानी से उपलब्ध हो, आय सृजन करने वाली हो, कम लागत की एवं गरीबी कम करने वाली हो, महिलाओं के अनुकूल तथा परिश्रम कम करने वाली हो। कृषक महिलाओं के अनुकूल तथा कठिन परिश्रम कम करने वाली कुछ प्रौद्योगिकी हैं - मक्का छिलका व बीज निकालने का यंत्र, मूँगफली छीलने का यंत्र, विकसित दराती, पारबॉइलिगं इकाई, सब्जी तोड़ने का यंत्र आदि। इन्हें मीडिया द्वारा बड़े स्तर पर लोकप्रिय और प्रचारित किया जाना चाहिए। गन्ना उत्पादन में भी कठिन परिश्रम वाली गतिविधि जैसे खुरचना मुख्यत: महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। इसी प्रकार फूल एवं कपास तोड़ना भी मुख्यत: महिलाओं के हाथों में है। कृ.म.अनु.नि. इस तरह की प्रौद्योगिकीयों को निखारने तथा विकसित करने को प्रयासरत है, हालाँकि जागरूकता एवं बाजार में उपलब्धता की कमी के कारण इनका एडॉप्शन बहुत संतोष जनक नहीं रहा है। इसके साथ ही बाजार में इनकी उपलब्धता सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इस तरह के ठोस प्रयासों से ही भारत में कृषि महिलाओं की दुर्दशा और कृषि उत्पादकता में सुधार किया जा सकता है।

नीलम ग्रेवाल

Editors : Dr. (Smt.) Abha Singh
: Smt. Tanuja. S
: Dr. Kushagra Joshi
Published by : Dr. Neelam Grewal, Director
Directorate of Research on Women in Agriculture
Baramunda, Bhubaneswar-751003
Odisha, Ph. : 0674-2386220
Fax : 0674-2386242
E-mail : nrcwa@nic.in
Website : http://www.drwa.org.in

सम्पादक : डा. (श्रीमती) आभा सिंह
: श्रीमती तनुजा. एस
: डा. कुशाग्रा जोशी
प्रकाशन : डा. नीलम ग्रेवाल, निदेशक
कृषिरत महिला अनुसंधान निदेशालय (भा.कृ.अनु.प)
डाकघर - बरमुण्डा, भुवनेश्वर - ७५१००३ उडीसा
दूरभाष : ०६७४-२३८६२२०
फैक्स : ०६७४-२३८६२४२
ई-मेल : nrcwa@nic.in
Website : http://www.drwa.org.in